कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 09, (फरवरी, 2024)
पृष्ठ संख्या 34–35

स्ट्रॉबेरी खेतीः उत्पन्नता और सावधानियां (क्लाइमेट रेसिलिएंट एग्रीकल्चर/क्लाइमेट स्मार्ट विलेज)

कुमारी मधुमाला[1], करणजीव कुमार[2],गौतम कुणाल[3] एवं सुमन कुमारी[4]

[1]उद्यान विभाग (फल विज्ञान), वीर कुँवर सिंह कृषि महाविद्यालय, डुमराँव, बक्सर
[2]उद्यान विभाग (फल विज्ञान), डॉ. कलाम कृषि महाविद्यालय, किशनगंज
[3]कीट विज्ञान विभाग, वीर कुँवर सिंह कृषि महाविद्यालय, डुमराँव, बक्सर
[4]विषय वस्तु विशेषज्ञ, अररिया, भारत।

Email Id: madhukumariroy@gmail.com

जलवायु और मिट्टीः

- स्ट्रॉबेरी की खेती ठंडा मौसम में अच्छे परिणाम देती है, जिसमें 15–25°C का तापमान होता है।
- अच्छी निर्दिष्ट, रेतीलीमृद भूमि, जिसमें हल्के अम्लीय या न्यूट्रल पीच (6–7) हो, स्ट्रॉबेरी के पौधों के लिए आदर्श है।

जाति का चयनः

- अपने क्षेत्र और स्थानीय स्थितियों के आधार पर स्ट्रॉबेरी की एक उपयुक्त जाति चुनें। भारत में चौंडलर, स्वीट चार्ली, और कैमरोसा जैसी प्रसिद्ध जातियाँ हैं।

पौधों का पौधरोपणः

- पौधरोपण सामान्यतः लगभग दिसंबर–जनवरी महीने में किया जाता है।
- उर्वरक मिश्रित मिट्टी बनाएं और अच्छे संचार के लिए अच्छा पानी निकालने वाली जड़ बनाएं।
- सजगता के साथ पौधों को दूरी बनाए रखने के लिए पौधों को अच्छी तरह से बोएं।

पानी देनाः

- स्ट्रॉबेरी को स्थिर नमी की आवश्यकता है, विशेषकर फूलों और फलों के स्तर में।
- पौधों को सुबह के समय पानी दें, ताकि पत्तियाँ सुखने का समय मिले, रोगों के जोखिम को कम करते हैं।

मलचिंगः

- स्ट्रॉबेरी बेड को तंग करने के लिए स्ट्रॉ या अन्य कार्बनी सामग्री से मलच करें।
- पुनःवृद्धि, नमी को बनाए रखने और बेरी को मिट्टी के सीधे संपर्क से बचाने के लिए।

उर्वरक प्रबंधनः

- पौधों के साथ पूर्व पौष्टिक और पुनःवृद्धि के बाद एक संतुलित उर्वरक लगाएं।
- अधिक नाइट्रोजन से बचें, क्योंकि यह फलों की उत्पन्नता के खातिर पत्तियों की अत्यधिक वृद्धि कर सकता है।

काटना:

- बेहतर हवा संचार को बढ़ावा देने और बीमारियों के जोखिम को कम करने के लिए नियमित रूप से पुरानी पत्तियों और रनर्स को हटाएं।

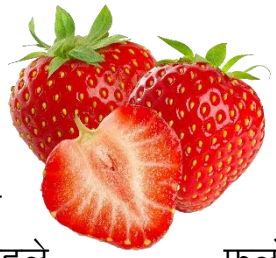

- फल उत्पन्न करने के लिए पहले फूलों को काट दें।

कीट

1. **लालूआ :** यह सुंदर फूलों और बेरीयों के पौधों पर पर्याप्त होता है और रस पीने के लिए पौधों के नीचे है। इसके प्रभाव से पौधों की स्थिति कमजोर हो सकती है और यह वायरसों का वाहक भी हो सकता है।
2. **रुखानी:** ये सूजी और रंगीन होते हैं और पौधों के नीचे अच्छे से छिप जाते हैं। ये पौधों के रस को पीने के कारण पौधों की सुखावट कर सकते हैं।
3. **कीटाणुओं की अन्य समस्याएं:** बीसीटीएस और थ्रिप्स जैसे अन्य कीटाणुओं की आशंका हो सकती है जो स्ट्रॉबेरी पौधों को प्रभावित कर सकती हैं।

रोग:

1. **ग्रे मोल्ड :** यह फूलों और बेरियों पर प्रभावित होता है और बर्फीले धूले जैसे स्थानों को बना सकता है। यह पानी और गर्मी की कमी में फैल सकता है।
2. **पाऊडरी मिल्ड्यू** : यह सफेद परत वाले पौधों के पेड़ों पर देखा जा सकता है और यह ज्यादातर फूलों और बेरीयों पर प्रभावित होता है।
3. **रूट रोट :** यदि पौधों की जड़ें जलमेली और भीगी रहती हैं, तो यह रोग हो सकता है जिससे पौधों की मृत्यु हो सकती है।
4. **अन्य रोग:** स्ट्रॉबेरी में रेड स्पॉट, आर्थिरियम रूट रोट, और बैक्टीरियल विंटर क्राउन स्थिति जैसे अन्य रोग भी हो सकते हैं।

सावधानियां और नियंत्रण:

- **प्राकृतिक शत्रुनाशकों का उपयोग:** नीम ओइल और नीम केक जैसे प्राकृतिक शत्रुनाशकों का उपयोग करें।
- **समय पर सिंचाई:** स्ट्रॉबेरी पौधों को समय पर सिंचाई दें और भीगी मिट्टी से बचें।
- **उचित उर्वरकों का उपयोग:** सबसे अच्छा उर्वरक का चयन करें और उसे सही मात्रा में प्रदान करें।
- **स्वच्छता बनाए रखें:** पुनरावृत्ति को कम करने के लिए पौधों की पुनरावृत्ति की सावधानियों का पालन करें।